

आंध्रप्रदेश की शीर्षपाद मात्स्यिकी
पि.पट्टनायक, एम. प्रसाद राव और जी. सेदा राव

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान का विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र,
पांडुरंगपुरम, विशाखपट्टणम, आंध्रप्रदेश

आंध्रप्रदेश भारत के पूर्वतट के महत्वपूर्ण राज्यों में से है जिसकी 974 कि मी की तट रेखा 9 तटीय जिलाओं में फैला पडा है। राज्य के समुद्री मछली अवतरण में वेलापवर्ती (pelagic) मछली प्रमुख संपदा है। तलमजृजी (demersal) क्रस्टेशियाइ (crustacea) और शीर्षपाद (cephalopods) क्रम में मिलती है। जिलाओं में उत्तर तट स्थित श्रीकाकुलम, विज़ियानगरम, विशाखपट्टणम और पूर्वी गोदावरी जिलाओं से यंत्रीकृत मत्स्यन रीतियों से कुल मात्स्यिकी पकड का 70% प्राप्त होता है। शीर्षपादों के बारे में समुद्री मात्स्यिकी पर सूचनाएं प्रदान करनेवाले संगठनों के अलावा सिलास (1985), मेय्यप्पन आदि (2000), मेय्यप्पन और मोहम्मद (2003) और मोहम्मद आदि (2007) ने रिपोर्ट पेश की हैं। आंध्रप्रदेश की मछली पकड में शीर्षपादों का योगदान 1.2% है। सत्तर के दशक तक शीर्षपाद मछली उतना पसंदीदा नहीं थी बल्कि पिछले दो दशाब्ध में इसकी माँग निर्यात की वजह से बढ गई है। आंध्रा तट से मिलनेवाला शीर्षपाद पैदावार देश के शीर्षपाद पैदावार का लगभग 1% है जो की पूर्व तट में है। पूर्व तट राज्यों का कुल शीर्षपाद पैदावार देश का शीर्षपाद पैदावार का 14% है। असल में शीर्षपादों को लक्ष्य करके यहाँ मत्स्यन नहीं किया जाता है। देश की अन्य पूर्व तट समुद्रवर्ती राज्य जैसे तमिलनाडु (0.273), प. बंगाल (0.008), उड़ीसा (0.002) की तुलना में आंध्रप्रदेश का शीर्षपाद उत्पादकता [t.km²] 0.034 है। यह शीर्षपाद साधन का समतल विदोहन तथा तुलनात्मक अधिकता को दर्शाता है। अतः यहाँ उत्पादकता और उत्पादन तुलनात्मक दृष्टि से अधिक है (मोहम्मद आदि 2007)। फिर भी अस्सी के दशक में कुल देशी उत्पादन में 2.6% शीर्षपादों का योगदान किए आंध्रप्रदेश की पकड घटकर अब 1% हो गयी है। यहाँ की मुख्य शीर्षपाद संपदाएं कट्टलफिश (cuttlefish) और स्क्विड (squid) हैं। यंत्रीकृत मत्स्यन के जरिए मिलनेवाला शीर्षपाद उत्पादन 95% कट्टलफिश है जबकि राज्य के कुल शीर्षपाद उत्पादन का 80-95% कट्टलफिश है। कट्टलफिश का जातिवार विभाजन करें तो इस में 45% *सेपिया अक्वूलेटा*, 40% *एस. फारोनिस*, 10% *एस. इनेरमिस* और 5% अन्य शीर्षपाद हैं। स्क्विडों में अधिकांश *तोलिगो डुवासेली* है, *डोरिटियुथिस*, *एस. लेसिलोनियाना* जातियाँ भी थोड़ी संख्या में दिखाई पडी। इन वर्षों में जातिवार परिवर्तन नहीं दिखाया पडा। विदोहन प्रवणता में स्थिरता दिखायी पडी पर यंत्रीकृत मत्स्यन के फलस्वरूप 1985- 90 के दौरान 500 टन रहा संपदा 2007 में 2600 टन के निकट पहुँच गया। पिछले 12 वर्षों में (1996-2007) शीर्षपादों की पकड में उतार - चढ़ाव दिखाया पडा। 1997 से लेकर उत्पादन में वृद्धि होकर 2002 में 2302 टन का चरम पैदावार हुआ। यह धीरे धीरे घटकर वर्ष 2005 में 1422 टन हो गया। विदोहन रीति की तीव्रता विध पकड रीतियों का प्रयोग, नए प्रकड क्षेत्रों में प्रवेश इस उतार - चढ़ाव का कारण माना जाता है। मेय्यप्पन और मोहम्मद (2003) ने मन्तव्य किया है कि पिछले 5 वर्षों से 100 मी गहराई के समुद्र के शीर्षपाद संपदाओं का विदोहन पूर्ण रूप से किया जा रहा है। उत्पादन मुख्यत यंत्रीकृत ट्रालरों से 100 मी या उससे ज्यादा गहराई के समुद्री विदोहन का अतिरिक्त पकड से होता है यह कुल शीर्ष पाद उत्पादन का 80-95% है। वर्ष 2007 के

दौरान छोटे यंत्रिकृत ट्रालारों के ज़रिए प्रति एकक पकड करीब 1.0 (0.2-3.7) और बड़े ट्रालारों के ज़रिए 1.19 (0.3-3.6) थे. यंत्रिकृत उत्पादन में कुल शीर्षपाद का 5% स्क्विड था। कुल शीर्षपाद उत्पादन में अयंत्रिकृत सेक्टर द्वारा हुआ योगदान 4-21% था। अच्छा पकड काल जुलाई - अगस्त व नवंबर - जनवरी था। पकडी गई मछलियों में *एल. डुवासेली* का आकार 40-150 मि मी, *एस. फारोनिस* का 70-300 और *एस. अक्यूलेटा* का 60-290 मि मी था। मेय्यप्पन और मोहम्मद (2003) के अनुसार कुल पकड का 15-20% तरुण मछली जो कि ट्रालिंग का परिणाम है। भारत के शीर्षपाद मछली के आकार में लिंग के अनुसार बढत दर में अंतर रिपोर्ट की है (मोहम्मद आदि, 2007). *एल. डुवासेलि* और *एस. फारोनिस* में नरों की तुलना में मादा जल्द बढ जाती है तो *एस. अक्यूलेटा* में मादाओं की तुलना में नर. शीर्षपाद मछली की घरेलू बाज़ार माँग कम हे और अधिकांश भाग निर्यात किया जाता है। शीर्षपाद मछली को लक्षित करके मत्स्यन नहीं किए जाने के कारण इस पर प्रबंधकीय नीतियाँ खींचना अनिवार्य नहीं है। ट्रालिंग, ज़रिए यह मूलतः पकड जाती है। नितलस्थ ट्रालिंग इसके आहार और बढती में प्रतिकूल प्रभाव डालता है। ट्रालिंग के मैसमिक नियंत्रण और ट्राल का नियमित उपयोग और व्यापार संबंधी विषयों पर ध्यान दिए जाने चाहिए।



कट्टलफिश



स्क्विड